शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

जयद्रथ-वध पद्य भाग

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

हे वीरवर अभिमन्यु! अब तुम हो यद्यपि सुर-लोक में,
पर अन्त तक रोते रहेंगे हम तुम्हारे शोक में।
दिन-दिन तुम्हारी कीर्ति का विस्तार होगा विश्व में,
तब शत्रुओं के नाम पर धिक्कार होगा विश्व में॥

भावार्थ

वीर अभिमन्यु के युद्ध में मारे जाने के बाद कवि अपनी भावना को व्यक्त करते हुए कहता है कि हे वीरों में श्रेष्ठ अभिमन्यु अब तुम यद्यपि स्वर्ग लोक में हो पर हम तुम्हारे शोक में अन्त तक रोते रहेंगे। संसार में दिन-प्रतिदिन तुम्हारी कीर्ति अधिकाधिक फैलती जायेगी और तुम्हारे शत्रुओं के चरित्र पर दुनिया धिक्कारेगी।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने वीर अभिमन्यु के शौर्य और पराक्रम को देखकर आश्चर्य चकित रह जाता है। वह जिस प्रकार द्रुतगति से अपने शत्रुओं पर प्रहार करते हुए कौरवों की सेना में हड़कंप मचा देता है उसे देखकर कवि गर्व का अनुभव करता है। इसलिए वह कहता है कि हम सभी अन्त तक रोते रहेंगे। तुमने जिस प्रकार अपने शत्रुओं को परास्त किया है उससे तुम्हारा मान संसार और बढ़ गया है और तुम्हारे नीच शत्रुओं को सदैव संसार में धिक्कार ही मिलने वाली है। तुम सदैव अमर रहोगे।

डॉ० देव चरण प्रसाद 28/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० द्वारसेना, प्रशियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि० – पत्र

दिगंत- भाग-2 पद्य भाग

शीर्षक :- "तुमुल कोलाहल कलह में"

कवि :- जयशंकर प्रसाद

व्याख्या :-

जहाँ मरु ज्वाला धधकती,
चातकी कन को तरसती ;
उन्हीं जीवन घाटियों की,
मैं सरस बरसात रे मन।

प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक से उद्धृत है। इसके कवि छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद जी हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जहाँ मरुभूमि की ज्वाला धधकती है और चातकी जल के कन को तरसती है, उन्हीं जीवन की आशा में मैं सरस बरसात बन जाती हूँ। कवि के कहने का भाव यह है कि जिन लोगों का जीवन मरुस्थल की सूखी घाटी के समान दुर्गम, विषम और ज्वालामय हो गया है, जहाँ चित्त चातकी को एक कण भी सुख का जल नहीं मिला हो उन्हें आशा की एक किरण मात्र मिल जाने से जीवन में रस की वर्षा होने लगती है।

प्रश्न :- बरसात को 'सरस' कहने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर :- बरसात जलों का राजा होता है। बरसात में चारों तरफ जल ही जल दिखाई देता है। पेड़-पौधे हरे-भरे हो जाते हैं। लोग बरसात में आनन्द एवं सुख का अनुभव करते हैं। उनका जीवन सरस हो जाता है अर्थात् जीवन में खुशियाँ आ जाती हैं। खेतों में फसल लहराने लगती हैं। किसानों के लिए यह समय तो और भी खुशियाँ लाने वाला होता है। इसलिए कवि जयशंकर प्रसाद ने बरसात को सरस कहा है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 28/10/20
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णिया

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

निबंधमाला - गद्य भाग

शीर्षक :- 'सिद्धि और प्रसिद्धि'

लेखक :- किशोर जी

प्रश्न :- आधुनिक युग में देश अथवा विदेश को किस प्रकार की साहित्य की जरूरत है, इस पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- 'सिद्धि और प्रसिद्धि' रचनाकार किशोरी (किशोर जी) का प्रसिद्ध निबंध है। लेखक ने इस निबंध में आधुनिक युग में देश अथवा विदेश को किस प्रकार की साहित्य की आवश्यकता है, इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उनका कहना है कि सम्पूर्ण विश्व को ऐसे साहित्य की आवश्यकता है, जो परंपरा पोषित होकर भी नवीन भावों और युगध्वनियों को मार्मिक बनाकर व्यक्त करने का सामर्थ्य रखता हो, जो कि साहित्यिक और शास्त्रीय दृष्टिकोणों के साथ-साथ जनवादी दृष्टि से भी सफल उतरता हो। लेखक का कहना है कि समय में परिवर्तन होना चाहिए। अब परियों, अन्नदाताओं और परवरदीगारों के सामने फरमाइशी रेकार्ड बजाने के दिन लद गये। आज आदमी की आवाज पहचान कर आदमी के लिए उसी की आवाज में साहित्य लिखना होगा।

इस प्रकार निबंधकार किशोर जी भावी साहित्य का स्वरूप स्थिर करते हुए स्वयं लेखकों के साधारणीकृत होने का संदेश देकर घोषणा करते हैं कि, पत्थर को देवता बनाकर बहुत दिनों तक पूजा गया, अब इन्सान को भगवान बनाकर उसकी वन्दना करनी होगी

देव चरण प्रसाद 28/10/20

एस० प्रो० हिन्दी

श०ड० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ